E-CONTENT

Subject : Economics
Class : B.A Part I (Paper II)
Topic : Gold Currency Standard
(स्वर्ण चलनमान)

By :
EKATA KUMARI
Guest Faculty
(Assistant Professor)
R.M.C Sasaram, Rohtas
Email I'd :
bhardwajekata@gmail.com

स्वर्ण - चलनमान :-

ये मान काफी पुराना मान है । इसे कट्टरवादी मान परंपरावादी मान और संपूर्ण मान भी कहते हैं । स्वर्ण - चलनमान अमेरिका में काफी दिनों तक चला । इस मान की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है :-

सोने के सिक्कों का चलन ।
कागजी मुद्रा और धातुओं अन्य धातुओं के बने सिक्कों का चलन है ।
सोने के सिक्कों की ढलाई स्वतंत्र रूप से होना सोने का आयात - निर्यात क्रय - विक्रय में भी स्वतंत्रता होनी चाहिए ।
विनिमय के माध्यम के रूप में स्वर्ण सिक्कों और अन्य मुद्रा का उपयोग करना ।

स्वर्ण - चलनमान के गुण :-

ये काफी सरल मान है और इसकी सरलता के कारण ही जनता का विश्वास दिन - प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। इसके भी कई कारण है :-

(a.) मुद्रा का अंकित मूल्य
(b.) मुद्रा का धातुगत मूल्य
दोनों एक - दूसरे के बराबर होता है (ii) अगर मुद्रा अवमूल्यन कर दिया जाए तभी इस मान में जनता का विश्वास नहीं घटता है क्योंकि सोने के सिक्के को गला कर धातु के रूप में बेचा जा सकता है।

इस मान के अंतर्गत जितनी भी मुद्राएँ चलन में होती हैं, उन सारी मुद्राओं का स्वर्ण से संबंध रहता है। Additional currency का circulation नहीं होने के कारण मौद्रिक स्थिरता बनी रहती है।

यह मान बिना सरकारी हस्तक्षेप के आर्थिक क्रियाओं को संपन्न करता रहता है। विनिमय दर और मूल्य स्तर दोनों में स्थिरता बनाए रखता है।

स्वर्ण - चलनमान की आलोचना :-

स्वर्ण - चलनमान के संबंध में यह कहा जाता है कि स्वर्ण सिक्के जब चलन में होते हैं, तो उसकी घिसावट के कारण संबद्ध राष्ट्र को अनावश्यक हानी उठानी पड़ती है। अतः आवश्यकता इस बात की है, कि हमें एक Economical monetary standard चाहिए। जिससे राष्ट्रीय संपत्ति की क्षति न हो।

स्वर्ण - चलनमान वह मान है, जिसमें मौद्रिक प्रणाली पूरी तरह बेलोचदार हो जाता है। अतः हम ये कह सकते हैं, यह मान संकट के समय साथ नहीं देता।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अभाव में यह मान असफल ही हो जाता है। जैसा कि कई बड़े देशों ने स्वर्ण के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था।

स्वर्ण - कोष के बढ़ जाने के बाद भी मुद्रा का प्रसार नहीं किया था। स्वर्ण कोष की कमी के बाद भी मुद्रा की मात्रा को नहीं घटाया था। यहाँ पर यह मौद्रिक मान स्वतः मान न होकर प्रबंधित मान हो गया था।

अतः ये सारी आलोचनाएँ इस बात को भी साबित करती है कि स्वर्ण - चलनमान में आंतरिक मूल्य स्तर की स्थिरता की जिम्मेदारी ली थी। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि अगर सोने के मूल्य में उतार - चढ़ाव होता रहे तो क्या आंतरिक कीमत स्तर को क्या स्थिर रखा जा सकता है। सोने के मूल्य में कई कारणों से परिवर्तन आता है। जैसे :-

अगर सोने के खान की खोज कर ली गई हो। सोने के उत्पादन की लागत में परिवर्तन आ गया हो।
सोने के उपयोग में आयात - निर्यात में उसकी मांग और पूर्ति में अगर परिवर्तन आ जाता है तो, सोने की कीमत में परिवर्तन को कोई रोक नहीं सकता है। ऐसी स्थिती में आंतरिक मूल्य स्तर मे स्थिरता को बनाए रखना बहुत ही कठिन होगा।

इस प्रकार यह कहना उचित होगा सही है कि managed currency system के माध्यम से विनिमय दर को भी स्थिर बनाना चाहिए। Prof. जॉन रॉबिन्सन का यह विचार है कि स्वर्ण - चलनमान अर्थव्यवस्था को currency inflation की ओर ले जाएगा। हॉट्रे यह कहना है कि यह मान सारव के नियंत्रण में अराजकता उत्पन्न कर सकता है, इसलिए स्वर्ण - चलनमान की जगह managed currency system ही सही है, इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वर्ण - चलनमान सही नहीं है।